तृतीय अध्याय

विनय का स्वरूप विवेचन

विनय का स्वरूप विवेचन --

संस्कृत-भक्ति-साहित्य में पर्याप्त मात्रा में 'विनय' की भावना अभिव्यक्त हुई है। संस्कृत में 'विनय' शब्द के अनेक अर्थ बताए गये हैं - जैसे 'विनय' साधक का हृदय और परमात्मा को एकरूप करने का सहज साधन है। शरीर और मन को संयमित करना, मन को भगवान में लगाना, साथ ही अपने जीवन के कर्तव्यों को पूरा करना तथा मर्यादापूर्ण जीवन बिताना, अपने से पहले अन्य दुखियों का विचार करना, भगवान के प्रति अटल विश्वास रखना तथा निष्काम भाव से अपना समग्र जीवन भगवान के प्रति समर्पित करना आदि सभी अर्थ संस्कृत के भक्ति-साहित्य में मिलते हैं। हिन्दी-साहित्य में विनय-गीतों की परम्परा संस्कृत से चली आयी है।

हिन्दी-साहित्य में विनय के पदों की रचना करनेवाले कवियों में भक्त-शिरोमणि तुलसीदास और महात्मा सूरदास जी का स्थान अग्रगण्य है। सूरदास जी के 'सूरसागर' में विनय के अनेक पद हैं। सूरदास जी का 'सूरसागर' केवल नाममात्र 'सागर' नहीं, किन्तु एक 'रत्नाकर' है और इसी रत्नाकर में हमें पाँच प्रकार के पद दिखाई देते हैं। वे निम्न प्रकार है :--

१ विनय
२ बालकृष्ण
३ रूपमाधुरी
४ मुरली - माधुरी और
५ भ्रमर गीत।

प्रेम एक ईश्वरीय चमत्कार है। प्रेम परमात्मा की एक शक्ति है। मनुष्य को ईश्वर तक पहुँचाने की सीढी प्रेम है। प्रेम को निम्न तीन श्रेणियों में रखा जा सकता है :--

१ छोटे का बडे के प्रति प्रेम ,

२ बडे का छोटे के प्रति प्रेम और

३ सम प्रेम ।

प्रथम श्रेणी का प्रेम वह प्रेम है जो हम ईश्वर तथा अपने माता-पिता या गुरूजनों के प्रति करते हैं । यहे भक्ति नाम से अभिहित होता है । दूसरे प्रकार का प्रेम जो अपनी संतान के प्रति, छोटे भाई-बहिनों के प्रति तथा अपने आश्रितों या सेवकों के प्रति किया जाता है, उसे हम वात्सल्य प्रेम की संज्ञा देते हैं । तीसरे प्रकार के प्रेम में मित्रता तथा दाम्पत्थ प्रेम का समावेश होता है ।

प्रथम प्रकार के प्रेम अर्थात भक्ति से सम्बन्ध रखनेवाले पदे विनये के अन्तर्गत आते हैं । किसी भी शुभकार्य का आरम्भ करते वक्त हम पहले ईश्वर से अनुनय विनय करते हैं, यह हम अनादि काल से देखते आये हैं । इसलिए भक्ति से सम्बन्धित जो पद मिलते हैं, उन्हें हम विनय के अन्तर्गत रखते हैं ।

विनय का स्वरूप विवेचन --

` विनय क्या है ? ` विनये का शब्दार्थ है विशेष प्रकार से झुकना` परमात्मा अथवा किसी भी शक्तिशाली के सम्मुख अपनी नम्रता या दीनता प्रकाशित कर उसके अनुग्रह की आकांक्षा करना ही` विनये है ।[१] मानव-हृदय जब नाना प्रकार के घटनाचक्रों के फेरे में पडने लगता है, तथा विविध यातनाओं का सामना करने के कारण व्यथित हो जाता है तब उसे ईश्वर की याद आती है । और उसे ईश्वर की महत्ता और अपनी दीनता का पता चलता है । ऐसे ही समय पर वह अपनी आत्मा को समुन्नत करने के लिए अपने अन्त:करण को विशाल बनाने के लिए ईश्वर की कृपा दृष्टि की अपेक्षा करता है । और उसका हृदय परमात्मा के प्रति नतमस्तक हो जाता है । वह ईश्वर के सामने अपना हृदय खोल देता है और अपने पापों का पर्दा खोलकर प्रायश्चित करने को फल भोगने को तैयार हो

जाता है। तब ईश्वर के अतिरिक्त उसको और किसी का भरोसा नही होता। ईश्वर के गुणगान और ईश्वर का ध्यान इसके अतिरिक्त उसे कुछ और नहीं रूचता। अपनी आत्मा और परमात्मा के बीच घनिष्ट सम्बन्ध का जब उसे ज्ञान हो जाता है तब वह अन्त:करण की अशुध्दि बल की कामना से - व्यक्तिगत स्वार्थ साधन के लिए नहीं - उसे जगदात्मा की अति विनीत भाव से प्रार्थना करना है। यही `विनय` है। अपने कार्य की सफलता अथवा अपनी समृध्दि एवं अभ्युदय के समय भी ईश्वर के गुणानुवाद करना, इस सफलता को ईश्वरीय अनुग्रह समझ कर उसको हृदय से धन्यवाद देना यह भी `विनय` ही है।

`विनय मानव - हृदय और परमात्मा को एक करने का सोल्यूशन है अथवा यों कहिये कि पुरूष और `पुरूषोत्तम` से बातचीत करने का `टेलीफोन है।`[२] `विनय` मनुष्य और ईश्वर के सम्बन्ध को निकटतम कर मनुष्य को ईश्वर के सामने उपस्थित कर देती है। `विनय` के बल से हमारा हृदय ईश्वर की ओर हठात आकृष्ट हो जाता है। बल्कि दूसरे शब्दों में यों कहिए कि मन का ईश्वर की ओर होना ही `विनय` है। `विनय` रूपी दूरबीन से हम ईश्वर को अपने निकट ही समझने लगते हैं। ईश्वर का सानिध्य हमारे अन्त:करण को शुध्द करने तथा पापों से बचने का सर्वोत्तम साधन है। हमें ईश्वरीय दिव्यता के दर्शन होने लगते हैं। हमारा मन कुविचारों को त्याग कर उत्तम और उदात्त विचारों की ओर आकृष्ट हो जाता है। `विनय` उस दीपक के समान है जो हमको जीवन-यात्रा के पथ पर प्रकाश दिखाकर सांसारिक प्रलोभनों और यातनाओं की ठोकरोंसे बचाकर सुमार्ग दिखाता है। `विनय` में बडी शक्ति है। इसीसे इस वैज्ञानिक युग में भी लोगों का विनय की शक्ति पर अटल विश्वास है। सुख में नहीं लेकिन संकट के समय में नास्तिक से नास्तिक लोग भी मन्दिरों में जा कर माथा टेकते हुए हमें दिखाई देते हैं।

`विनय` का हमारे जीवन पर बडा गहरा प्रभाव पडता है। वह इतनी क्षण भंगुर नहीं कि मुख से उच्चारण करते ही विलीन हो जाय और हमारे चित

पर उसका कोई असर न पड़े । यदि हृदय में श्रध्दा और विश्वास का बीज बोना चाहो, मन में प्रेम और आशा का संचार करना चाहो तो हमें शुध्द अन्त:करण से परमात्मा की `विनय` करनी पड़ती है । `विनय` का एक शब्द ही हमारे व्यक्तित्व को सशक्त बनाने के लिए काफी है । परमात्मा संसार की समस्त शक्तियों, विधाओं और गुणों का स्त्रोत है । मनुष्य सान्त है परमात्मा की शक्तियों के सामने उसकी शक्ति क्षुद्र है, किन्तु विनय के द्वारा जब मनुष्य का परमात्मा से संबंध होता है, तब उसकी इच्छा न होते हुए भी वह समस्त शक्तियों और संपूर्ण विधाओं के अनादि,अनंत स्त्रोत का स्वत: अधिकारी बन जाता है । विनय के द्वारा ही कलुषित आत्मा पवित्र हो जाती है । फिर जीवन में दिव्यता का संचार हो जाता है । उपर्युक्त सभी कारणों से लोगों ने पग-पग पर विनय का ही अवलंबन किया है । कार्य का आरंभ करो तो `विनय`, मध्ये में पहुँचो तो विनय, समाप्त करो तो `श्रीकृष्णार्पणमस्तु` । बिना विनय के कोई कार्य संपादन नहीं होता । हमारे कविवरों ने भी अपने काव्यों को `विनय` हीन नही छोड़ा ।

गोस्वामी तुलसीदास जी अपने `रामचरितमानस` में तो पग-पग पर `विनय` के लिए झुकते हैं, किन्तु इतने पर भी उनकी आत्मतुष्टि नहीं होती इसीलिए तुलसीदास ने `विनयपत्रिका` ग्रन्थ ही रच डाला । अपने इष्टदेव की भक्ति के लिए तथा उससे मिलने के लिए तुलसी ने स्वयं को चातक पंक्षी की उपमा ली है वे कहते हैं --

स्वाति सलील रघुनाथ जस चातक तुलसीदास

भक्त कवयित्री मीराँ ने भी अपने इष्टदेव के मिलन के लिए `विनय` के पद रचे हैं । मीराँ की `विनय - भावना` एक बिरहन की भावना की तरह उद्दीप्त होती हुई दिखाई देती है --

बसो मेरे नैनन में नंदलाल
मोहनी मुरति, साँवरी सूरति, नैना बने बिसाल ।

हिन्दी के भक्ति-काव्य में जो दो प्रमुख प्रवाहहैं - निर्गुण और सगुण - उनमें विनय के गीत पर्याप्त मात्रा में मिलते हैं वे इसलिए कि संतत्व के लिए विनय की अनिवार्यता है। निर्गुण - काव्य के एक श्रेष्ट संत कबीर में भी विनय की भावना प्रचुर मात्रा में व्यक्त हुई हैं --

कबीर सूता क्या करै, गुण गोविन्द के गाइ ।।

वैष्णव सम्प्रदाय के अनुसार विनय में सात बातों का समावेश होता है। इनको भूमिका कहा जाता है। बिना भूमिका के विनय परिपूर्ण नहीं समझी जाती। ये भूमिकाएँ निम्नलिखित हैं ---

१ दीनता,अर्थात अपने को अति तुच्छ समझना और असफलता का सारा दोष अपने सिर पर लेना।

२ मानमर्षता,अर्थात निराभिमान होकर इष्टदेव के ही शरण जाना।

३ भयदर्शन,अर्थात जीव को भय दिखलाकर इष्टदेव के सम्मुख कर देना।

४ भर्त्सना,अर्थात अपने मन को शासित करना।

५ आश्वासन,अर्थात अपने इष्टदेव के गुणों पर विश्वास रखना और उसी की कृपा के भरोसे धीरज देना।

६ मनोराज्य,अर्थात बडी-बडी अभिलाषायें करना और इष्टदेव से उनकी पूर्ति के लिए प्रार्थना करना।

७ विचारणा,अर्थात दार्शनिक सिध्दान्तों का विवेचन, जिससे संसार के मायाजाल में फँसने तथा नाना प्रकार की अन्यान्य कठिनाइयों के दिग्दर्शन द्वारा मन को उस ओर से विरक्त करके भक्तिमार्ग में आसक्त करने में सफल होना।

इन सिध्दान्तों के अतिरिक्त वैष्णव संप्रदाय का एक यह सिध्दान्त भी है कि जीव को भगवच्छारणाश्रित होने के लिए निम्नांकित छः नियमों का पालन करना आवश्यक हैं --

१ अनुकूलस्य संकल्प ,

२ प्रतिकूलस्य वर्जनम्

३ रक्षिष्यातीति विश्वासो,

४ गोप्तृत्व - वर्णनम्

५ आत्मनिक्षेप

६ कार्पण्यं षड्विधा शरणागति: ।

उपर्युक्त छ: नियमों के अर्थ इस प्रकार हैं ---

१ अनुकूलस्य संकल्प --

इसमें अपने इष्टदेव के अनुकूल गुणों को धारण करने का संकल्प किया जाता है ।

२ प्रतिकूलस्य वर्जनम् --

इसमें अपने इष्टदेव के प्रतिकूल गुणों का त्याग किया जाता है ।

३ रक्षिष्यतीति विश्वासो --

मेरे इष्टदेव मेरी रक्षा अवश्य करेंगे मेरा कोई अनिष्ट न होने देंगे, इस बात का दृढ विश्वास ।

४ गोप्तृत्व - वर्णनम् --

अपने गोप्ता अर्थात अपने रक्षक का गुणगान करना ।

५ आत्मनिक्षेप --

तन मन और कर्म सब कुछ भगवान को अर्पन करना ।

६ कार्पण्य षडविधा शरणागति --

दीनता प्रकट करते हुए परमात्मा के सामने अपने पापों का स्वीकार करते हुए उनके मार्जन के लिए विनय करना ।

विनय के इन सिध्दान्तों के वर्णन करने का मुख्य उद्देश्य यह है कि सूरदास जी की विनय की विवेचना सुलभ हो और उनके विनय का तत्व पूर्णतया स्पष्ट हो इन सिध्दान्तों और नियमों को ध्यान में रखकर यदि हम सूरदास के विनय के पदों का अध्ययन करें तो हमें मानना पड़ता है कि सूरदास ने इन सिध्दान्तों का पूरा-पूरा विचार करके अपने विनय के पद लिखे हैं । उनके हर एक पद में भगवान के प्रति अटल विश्वास तथा भक्ति और पूर्ण प्रेम प्रकट होता हुआ दिखाई देता है । सूरदास के विनय के पदों की प्रशंसा करते हुए खण्डेलवाल लिखते हैं --

" सूर के विनय के पद भक्त हृदय सूरदास के हृदय की मनोहर झाँकी प्रस्तुत करते हैं । इन पदों में विनय, प्रबोध, वैराग्य, निरहंकारिता, दीनता एवं आत्मसमर्पन की भावनाओं के साथ भक्ति की सरिता उमड़ रही है ।"[३]

" सूरपंचरत्न के लेखक त्रय ने भी सूरदास के विनय के पदों की समीक्षा करते हुए लिखा है" सूर के विनय के पद बड़े स्वाभाविक हैं । सूर ऐसे सच्चे बैरागी के हृदय से ही ऐसे उद्‌गार निकल सकते हैं । उनका प्रत्येक शब्द भगवद्-भक्ति- जल सिक्त हृदय से निकलता है । तुलसीदास के बाद सूरदासजी ही" विनय" सम्बन्धी पद रचने में सफल हुए हैं ।"[४] सूरदास के विनय के पदों का स्वरूप सविस्तर रूप से अगले अध्याय में देखेंगे ।

-- निष्कर्ष --

विनय का स्वरूप विवेचन देखने बाद हम इस निष्कर्ष पर आ जाते हैं --

` विनय` याने विशेष प्रकार से झुकना । परमात्मा अथवा किसी भी शक्तिशाली के सम्मुख अपनी नम्रता या दीनता प्रकट कर उसके अनुग्रह की आकांक्षा करना ही विनय है । ` विनय` मानव-हृदय और परमात्मा को एक करने का साधन है । अपने कार्य की सफलता को ईश्वरीय अनुग्रह समझकर उसको हृदय से धन्यवाद देना यह भी विनय है ।

` विनय ` साधक का हृदय और परमात्मा को एकरूप करने का सहज साधन है । शरीर और मन को संयमित करना मन को भगवान में लगाना साथ ही अपने जीवन के कर्तव्यों को पूरा करना तथा मर्यादापूर्ण जीवन बिताना,अपने से पहले अन्य दुखियों का विचार करना,भगवान के प्रति अटल विश्वास रखना तथा निष्काम भाव से अपना समग्र जीवन भगवान के प्रति समर्पित करना आदि सभी बातों का समावेश ` विनय` के अन्तर्गत होता है ।

विनय का हमारे जीवन पर गहरा प्रभाव है । हम जब शुभकार्य करते हैं तो उसका प्रारंभ हम विनय से ही करते हैं । बिना विनय के हमारा कोई भी कार्य संपादन नहीं होता इसलिए विनय का स्थान हमारे जीवन में महत्वपूर्ण है ।

विनय में मुख्यता: सात बातों का समावेश होता है जिसे भूमिका कहा जाता है , बिना भूमिका से ` विनय` परिपूर्ण नहीं होती । वे भूमिकाएँ इस प्रकार है --

दीनता, मानमर्षण, भयदर्शन, भर्त्सना,आश्वासन,मनोराज्य, विचारण इन भूमिका के अतिरिक्त विनय में छ: नियमों का भी पालन होता है -- अनुकूलस्य संकल्प, प्रतिकूलस्य वर्जनम्, रक्षिाव्यतीति विश्वासो तथा गोप्तृत्व वर्णनम्, आत्मविक्षेप, कार्पण्य-षडविधा शरणागति उपर्युक्त सभी नियमों और भूमिका का पालन सूर ने अपने विनय के पदों में हू-ब-हू किया है । सूरदास के इन पदों में आत्मदीनता का भाव दिखाई देता है ।

संदर्भ - सूची

१ संकलयिता
स्वर्गीय लाला भगवानदीन
तथा
पं.मोहनवल्लभ पन्त बी.ए.
`सूरपंचरत्न`
पृ.कृ.६५

२ संकलयिता
स्वर्गीय लाला भगवानदीन
तथा
पं.मोहन वल्लभ पन्त बी.ए.
`सूरपंचरत्न`
पृ.कृ.६५

३ जयकिशन प्रसाद खण्डेलवाल
`महाकवि सूरदास`
पृ.कृ.६५

४ परीक्षा द्वारिकादास
तथा
प्रभुदयाल मीतल
`सूर - निर्णय`
पृ.कृ.१७० ।